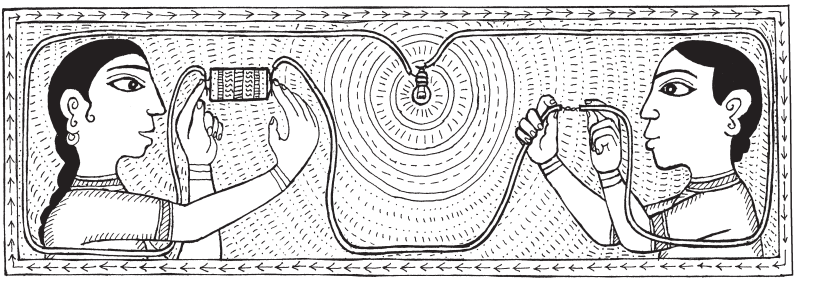

चित्र: कैरन हैडॉक

स्कूल का पहला दिन

(तीन साल पहले)

कालू राम शर्मा

घर की ढलानदार छत पर नालीदार खपरैलों को जमाने के काम में नारंगी और उसकी माँ सुबह से ही लगी हुई थीं। छत पर अपना सन्तुलन बनाकर खड़ी हो नारंगी की माँ ने अपने पल्ले से माथे का पसीना पोंछा और बोलीं, "पाँचवीं पास तो हो गई। मेरा मन तो करता है कि तू आगे भी स्कूल ज़रूर जाए। घर-बार का काम तो होता रहेगा।" यह कहकर नारंगी की माँ छत के खपरैलों को जमाने में फिर से जुट गईं।

रोहिणी की तपन के चलते नारंगी और उसकी माँ पसीने में लथपथ हुए जा रही थीं। नारंगी की नज़रें सीमेंट-कॉंक्रीट की छत पर से होती हुई बादलों पर जाकर टिक गईं। आसमान में सफेद बादलों के पीछे काले-काले बादल बनने लगे थे। झक सफेद बादल ऐसे लग रहे थे मानो नीले आसमान के कैनवास पर कपास के ढेर हों; मानो आसमान पर गलीचे बिछा दिए हों। धूप और छाया लुकाछिपी का खेल खेल रहे थे। एक पल में छाया, एक पल में धूप। ठण्डी हवा का झोंका बदन के पसीने को सुखाता और ठण्डक का एहसास देता। फिर आगे बढ़ता और नुक्कड़ के विशाल पीपल के पेड़ की शाखाओं, कोपलों व पत्तों को हिलाता। पीपल की पत्तियाँ एक-दूसरे से ऐसे टकरातीं मानो तालियाँ बज रही हों। छत पर खड़ी हो नारंगी पत्तियों की हलचल को निहार रही थी। तेज़ झोंके से पुरानी पड़ चुकी पत्तियाँ टूटकर हवा में लहराती

हुई गिरतीं, जिन्हें देखकर नारंगी अचरज में पड़ जाती।

नारंगी ने पत्तों से ध्यान हटाकर आसमान में छाए घने बादलों पर नज़रें जमाईं और अनुमान लगाया, "आज तो पानी आएगा।"

माँ ने कन्धे उचकाए। नारंगी माँ के कन्धे उचकाने के इशारे को समझने की कोशिश कर रही थी। शायद उनके इशारे का अर्थ था – क्या पता! पानी बरस भी सकता है और नहीं भी।

"तेरे मुताबिक अगर बरसने वाला है तो चल, जल्दी से खपरैल फेरकर नीचे उतर जाते हैं।" नारंगी की माँ के हाथ तेज़ी-से खपरैलों पर चलने लगे थे।

पढ़-लिखकर क्या होता है?

शाम होते-होते छत तैयार हो चुकी थी। नारंगी की माँ के दिमाग में कई द्वन्द्व चल रहे थे। उनमें से एक द्वन्द्व नारंगी की पढ़ाई को लेकर चल रहा था, जो थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। नारंगी व उसकी माँ छत से उतर चुके थे। नारंगी खेलने चली गई थी। माँ घर के काम में जुट चुकी थीं। काम करते हुए उनके ज़हन में नारंगी की पढ़ाई का विचार घुमड़ रहा था। वे यह सोचकर सिहरी जा रही थीं कि नारंगी के बापू नारंगी को स्कूल में आगे पढ़ने के लिए मना न कर दें। नारंगी के बापू कब के घर आ चुके थे व खटिया पर लेटे हुए थे। नारंगी की माँ तो अपने काम में ही जुटी हुई

चित्र: रंजित बालमुचू

थीं। थोड़े इन्तज़ार के बाद, बापू ने नारंगी की माँ को पानी लाने का इशारा किया। माँ ने बापू को पानी का लोटा थमाया और उनके मूड को पढ़ने की कोशिश करने लगीं।

नारंगी के बापू बाहर से चुप व शान्त दिखाई दे रहे थे, मगर उनके दिमाग में मॉनसून-सी हलचल मची हुई थी।

बापू ने पूछा, "नारंगी नहीं दिख रही। साँझ हो गई फिर भी घर नहीं आई...?"

"यहीं-कहीं गई होगी।" माँ ने कहा। दोनों के बीच फिर से चुप्पी छा गई।

"बरसात की तैयारी है आज रात को!" बापू मॉनसून को लेकर आशान्वित थे, मगर वे छोटे-से खेत में उगाई जाने वाली खरीफ की फसल के भविष्य को लेकर चिन्तित हो चले थे।

"कल से नारंगी का स्कूल खुल जाएगा।" माँ बोलीं।

"अरे, मैं बरसात की बात कर रहा हूँ और तू है कि छोरी के स्कूल जाने

का रोना रो रही है। नारंगी को स्कूल भेजने का अच्छे से सोच लो। गाँव की कोई भी छोरी आज तक आगे नहीं पढ़ी। अपन भी सोच लें।" नारंगी के बापू खाना खाते हुए नारंगी की माँ से बोले।

"पढ़-लिख ले तो अच्छा होगा।" नारंगी की माँ सहमकर बोलीं।

"देख ले..." नारंगी के बापू ने हाथ धोते हुए कहा। "हाँ, ये तो ठीक ही है। ये सोचना होगा कि अकेली छोरी और बाकी सब छोरे! फिर छोरी को पढ़ाने का क्या फायदा..."

माँ बोलीं, "नारंगी कह रही थी..."

"क्या?" बापू ने अपने गीले हाथ धोती के पल्लू से पोंछते हुए पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं... उसकी मर्ज़ी स्कूल जाने की है... कम-से-कम आठ क्लास तक पढ़ ले तो अच्छा।" माँ बोलीं।

"चलो, ये भी सही... तू कहती है तो आठ क्लास तक पढ़ ले। पर पढ़कर क्या कर लेगी? इसका जवाब दे। ये ध्यान रखना कि अपने गाँव के पटेल साब की बच्ची को पाँचवीं के बाद स्कूल छुड़वा दिया।" नारंगी के बापू गाँव के लोगों से तुलना कर रहे थे। "हाँ, ये अलग बात है कि ज़रा-सी छुटकी छोरी का ब्याह करना था पटेल साब को।"

"अब ये तो पता नहीं कि पढ़कर कोई बड़ी नौकरी करेगी या नहीं। मेरा मन कहता है कि नारंगी को पढ़ा दें तो कम-से-कम पढ़ना-लिखना तो सीख लेगी। कुछ तो फरक पड़ेगा। मेरे जैसी मजूरी तो नहीं करेगी।" माँ ने कहा।

"ये बात मत कर। तेरे को क्या तकलीफ दी है? मजूरी करना कोई बुरी बात तो नहीं! मन तो मेरा भी है कि पढ़े, पर स्कूलों में पढ़ाई होती कहाँ है ढंग की! अरे, पढ़ाना भी तो नहीं आता। देख ले, अपने गाँव के पढ़े-लिखों का हाल। पढ़-लिखकर ऐसे बिगड़ते हैं कि घर-खेत का काम भी नहीं करते।" नारंगी के बापू अब चुप थे। फिर मन-ही-मन बुदबुदाने लगे, "भण्या पर गुण्या नी। हाँ, एक बात... उसको घर-बार के काम ज़रूर करवाना।"

लग जाओ काम में!

नारंगी बाहर खेलने गई थी। दरअसल, खेल से लौटकर नारंगी ने दरवाज़े की आड़ में खड़ी हो माँ और बापू के वार्तालाप को सुन लिया था।

अगली सुबह माँ ने नारंगी से कहा, "ये कुर्ता धो ले, स्कूल जाना है।"

माँ ने मुड़कर देखा कि नारंगी अपने बालों की लट को उँगलियों में लपेटे हुए है। माँ समझ चुकी थीं कि जब नारंगी कुछ गहरा सोच रही होती है तो बालों की लट अपनी बीच की दो उँगलियों में लपेट लेती है।

आखिर माँ ने टोक ही दिया, "चल, अब लग जा काम में!" नारंगी

उस सोच से बाहर निकली और लग गई काम में।

सुबह-सुबह नारंगी अपना कुर्ता धोकर आँगन में सुखा रही थी। तभी उधर से इसरार बिना स्टैंड की साइकिल चलाते हुए आ रहा था।

नारंगी ने कुर्ता दीवार के सहारे खड़ी रखी खटिया पर सूखने को लटकाया और इसरार से साइकिल लेकर चलाने लगी। साइकिल इतनी ऊँची और भारी थी कि उसके लिए चला पाना मुश्किल हो रहा था। उसने इसरार से कहा, "ले, ज़रा पकड़।" इसरार ने साइकिल को पीछे से पकड़ा और धक्का लगा दिया। नारंगी की साइकिल चल पड़ी। कुछ दूर जाकर वह साइकिल पलटाकर लाई और इसरार को थमाते हुए बोली, "स्कूल में मिलते हैं।"

"अच्छा..." इसरार के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे। इसरार ने साइकिल पलटाई। इस बार, नारंगी ने साइकिल चलाने में इसरार की वैसे ही मदद की जैसे इसरार ने उसकी की थी। इसरार जाते हुए बोला, "अच्छी बात है! मुझे भी इजाज़त मिल गई है स्कूल जाने की। अब्बा ने कहा, स्कूल जाओ। अगर फेल हो गए तो खैर नहीं।"

नारंगी कुछ कहना चाह रही थी, मगर इसरार तो जा चुका था। जल्दी-से तैयार होकर नारंगी स्कूल चल दी।

पढ़ाई शुरू?

भारी तपन के बाद अच्छी बरसात होने से गाँव के किसान खेतों में खरीफ फसल की बोनी शुरू कर चुके हैं। इस वजह से वे अलसुबह खेतों में चले गए हैं। गाँव में बचे हैं तो वृद्ध, दूध पीते बच्चों की माँएँ और बच्चे। कुछ बच्चे गलियों में दिखाई दे रहे हैं। वहीं कुछ अन्य बच्चे घरों के बरामदों में अपने-अपने खेलों में व्यस्त हैं। दूध पीते छोटे बच्चे पालनों में सोए हुए हैं। कहीं-कहीं से छोटे बच्चों के रोने की आवाज़ आ रही है। उन छोटे बच्चों की माँएँ ढोरों पशुओं को बाँधने की जगह को साफ करने में लगी हुई हैं। अन्य महिलाएँ कुओं-बावड़ियों से पानी भरकर ला रही हैं, और कुछ वृद्ध महिलाएँ घूरे पर कचरा डालने आती-जाती दिखाई दे रही हैं।

दिलचस्प यह है कि स्कूलों के खुलने और बरसात के आने का वक्त लगभग साथ-साथ ही होता है। बीती रात आँधी-तूफान के साथ जमकर बरसात हुई थी। अन्धड़ इतनी तेज़ थी कि कई पेड़ उखड़ गए। गाँव के कच्चे घरों के टिन के चद्दर उड़ गए। गली के नुक्कड़ पर स्थित नीम के पेड़ की मोटी-मोटी डालियाँ टूटकर गिर चुकी थीं। गाँव के किनारे, गुलमोहर का पेड़ जड़ समेत ही धराशायी हो चुका था। बरसात की वजह से गलियों में कीचड़ मच चुका

चित्र: योगेश्वरी

था। हालाँकि, बरसात इतनी भी नहीं हुई कि नालों में बाढ़ आ जाए। बरसात की वजह से मौसम में ठण्डक घुल चुकी थी। अब गली में बच्चे गीली मिट्टी के खिलौने बनाने में जुटे हुए दिखाई दे रहे थे।

स्कूल जाने वाले बच्चे सुबह से ही अपने-अपने घरों के काम में जुटे हुए थे। स्कूल का वक्त हुआ तो वे सब चल दिए। वैसे, स्कूल की तैयारी के नाम पर कुछ खास तैयारी तो करनी नहीं होती है। बस, एक थैलीनुमा बस्ता, पुरानी कॉपी और पैन वगैरह।

बच्चों को भी यह पता था कि स्कूल भले ही खुल जाए मगर अभी पढ़ाई होने वाली नहीं। सरकारी कागज़ों में कहने को तो स्कूल खुल जाते हैं, मगर स्कूल में पढ़ाई प्रारम्भ नहीं हो पाती। पढ़ाई शुरू न होने की वजहें गिनी-चुनी ही हैं, मगर ये गिनी-चुनी वजहें हैं काफी अहम। कुछ स्कूल ऐसे हैं जहाँ शिक्षकों की कमी एक प्रमुख वजह है। आम तौर पर, शिक्षा विभाग शिक्षकों के स्थानान्तरण का मामला स्कूल खुलने के साथ-साथ खोलता है। इस वजह से शिक्षक समुदाय शिक्षा विभाग के चक्कर लगाते रहते हैं। यह वक्त शिक्षकों के लिए काफी तनाव भरा होता है।

दूसरी वजह है, वक्त पर पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता न होना। पाठ्यपुस्तकों के बिना हमारे यहाँ पढ़ाई शुरू नहीं हो पाती। ग्रामीण इलाकों में किताबें समय पर नहीं पहुँच पातीं। हालाँकि, कई बार तो समय पर पर्याप्त रूप से किताबें छप ही नहीं पातीं कि स्कूलों में सही समय पर पहुँच सकें। इस वजह से कई बार तो आधा शिक्षा सत्र निकल जाने तक भी पाठयपुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पातीं।

तीसरी वजह पारम्परिक कही जा सकती है। स्कूल खुलने के तुरन्त बाद पढ़ाई का प्रारम्भ न होना, एक परम्परा ही बन चुकी है। शिक्षकों से लेकर शिक्षा विभाग तक, हर किसी

के दिमाग में यह बात पैठ बना चुकी है कि असल पढ़ाई तो झण्डे से झण्डे (15 अगस्त से 26 जनवरी) तक होती है।

पहला दिन मैला

स्कूल शुरू होने की घण्टी बज चुकी थी, मगर अब तक कुल जमा 15-17 बच्चे ही पहुँचे थे। पहला दिन जो था। छठी में नारंगी अकेली ही लड़की दिख रही थी। उधर मास्साब प्रधानाध्यापक के कमरे में बैठे कागज़ों में खोए हुए थे।

बच्चे स्कूल कैम्पस में चहलकदमी कर रहे थे। कैम्पस के हैण्डपम्प पर कुछ महिलाएँ कपड़े धो रही थीं। स्कूल की चारदीवारी की टूटी-फूटी मुँडेर पर बकरियाँ टहल रही थीं और उस पर फूट आई हरी-भरी घास पर मुँह मार रही थीं।

मास्साब बाहर आए और बच्चों को इशारे से अपनी ओर बुलाया, "चलो, ज़रा इस कैम्पस की सफाई कर डालो।"

बच्चों ने मास्साब के कहे अनुसार झाड़ू उठाई और सफाई कर कचरा समेटने लगे। मास्साब भी बच्चों के बीच आकर उनके साथ सफाई में जुट गए।

तकरीबन दो महीनों से बन्द स्कूल की दशा खराब हो चुकी थी। स्कूल कैम्पस में पशुओं के घुसने से जहाँ-

चित्र: हीरा धुर्वे

तहाँ गोबर फैला पड़ा था। करीब दो-ढाई घण्टे की मेहनत रंग लाई व स्कूल का अगवाड़ा-पिछवाड़ा साफ हो गया।

अभी स्कूल की घण्टी भी अपनी जगह पर नहीं टँगी थी। बच्चों ने कमरों में झाँककर देखा तो पाया कि अभी कमरे बैठने लायक नहीं हैं।

भागचन्द्र छठी कक्षा का सबसे ऊँचा और बलवान बच्चा था। वह मास्साब के कमरे की ओर हिम्मत करके गया और पूछने लगा, "मास्साब, कमरे साफ कर दें?"

मास्साब ने भागचन्द्र को देखा तो नहीं मगर सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी।

भागचन्द्र ने सभी बच्चों को आवाज़ लगाई और कमरों की सफाई की योजना बना डाली। भागचन्द्र ने ताकत लगाकर दरवाज़े की कुण्डी खोली। "बाप रे, भीतर तो बुरा हाल है!" सभी ने मिलकर काफी मेहनत से सब कमरों की सफाई कर डाली। अब तक दोपहर हो चुकी थी। बच्चे समझ चुके थे कि मास्साब कक्षा में आने वाले नहीं हैं इसलिए वे सब खेल खेलने में मशगूल हो गए।

जान-पहचान

पिछले कई दिनों से बच्चे स्कूल तो आ रहे थे, मगर वे शिक्षकविहीन कक्षा में कुछ देर रुकते और घर को लौट जाते।

आखिर एक दिन आ ही गया जब मास्साब कक्षा में आए।

"ऐ... मास्साब आ रहे हैं!" डमरू बोला। "चलो रे, मास्साब आ रहे हैं!"

मास्साब को आते देख बच्चे कक्षा में घुस चुके थे। मास्साब ने कक्षा के कमरे पर नज़र घुमाई, "वाह, कमरे की सफाई तो बढ़िया हो गई। ...तो तुम छठी में आ गए हो?" सभी बच्चों ने एक-साथ 'हाँ' में जवाब दिया। मास्साब के लिए कक्षा छठी के बच्चे नए थे।

"अच्छा, तो छठी में एक ही लड़की है!"

इस बार नारंगी ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

"अच्छा, तो कल से हमारी पढ़ाई शुरू होगी, मगर एक काम करना होगा..." मास्साब कहते-कहते रुक गए। बच्चे मास्साब की ओर टकटकी लगाए हुए थे।

"ऐसा करते हैं, सबसे पहले हम सब एक-दूसरे को जान तो लें।" मास्साब ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा। अब तक सभी बच्चे कक्षा के फर्श पर बैठ चुके थे।

"मेरा नाम तुम जानते हो?" कक्षा में 'हाँ-नहीं' की आवाज़ गूँज रही थी।

मास्साब ने अपना परिचय दिया और फिर सबसे कहा कि बारी-बारी से अपना नाम और उन्हें क्या अच्छा लगता है या अपने बारे में कोई अन्य चीज़ बताएँ।

"डमरू मास्साब!"

मास्साब ने हँसते हुए बोला, "आपका नाम 'डमरू मास्साब' है?" पूरी कक्षा में हँसी का वातावरण बन गया।

"नहीं... डमरू।"

"अरे, ये तो बड़ा मज़ेदार नाम है!" मास्साब अपनी कुर्सी खिसकाते हुए बोले।

"मास्साब, मुझे खेलना बहुत अच्छा लगता है।" डमरू ने बताया।

"भागचन्द्र मास्साब!" कक्षा फिर से हँसने लगी। भागचन्द्र को समझ में आ गया और उसने फिर से अपना नाम दोहराया, "भागचन्द्र। मुझे भी खेलना पसन्द है।"

"चन्दर। मुझे क्रिकेट खेलना अच्छा लगता है।"

"केशव। मुझे दोस्तों से बात करना अच्छा लगता है।"

"विष्णु। मुझे भी।"

"क्या 'मुझे भी'? तुम्हें क्या अच्छा लगता है? क्या तुम यह कह रहे हो कि केशव की तरह तुम्हें भी दोस्तों से बात करना अच्छा लगता है?" मास्साब ने सवाल किया।

विष्णु शरमाकर बोला, "हाँ, मास्साब।"

"हाहाहा! ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं।" मास्साब ने अगले बच्चे की ओर इशारा कर उसे अपना परिचय देने को कहा।

"शाकिर। खेलना, दोस्तों से बात करना और भिण्डी की सब्ज़ी पसन्द है।"

बस, फिर क्या था! कक्षा में ज़ोर का ठहाका लगा। मास्साब भी खिलखिला रहे थे।

"रघु, मास्साब। मुझे खेत में जाना पसन्द है।"

"नारंगी। मुझको दोस्त बनाना अच्छा लगता है।"

"अच्छा, ठीक है। आगे बताओ नाम।" मास्साब ने इशारा किया।

"मास्साब, इसरार... खेलना, साइकिल चलाना पसन्द है।"

"वेरी गुड! तो चलो, अब कल से पढ़ाई शुरू कर देंगे। आज हम एक काम करते हैं..."

यह सुन बच्चे कक्षा के बाहर जाने लगे। मास्साब ने रोका, मगर बच्चे रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अबकी बार मास्साब ताकत से बोले, "अरे, कहाँ जा रहे हो?"

मास्साब को एहसास हुआ कि उन्होंने बच्चों को 'काम' का कहा है इसीलिए वे कक्षा के बाहर भागे जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने बच्चों को रोका और बोले, "जो काम करना है, उसके बारे में सुन तो लो। सबसे पहले, जो काम करना है हम उसकी बात करेंगे। काम करने के पहले योजना तो बनानी पड़ेगी न! ...तो मैं ये कह रहा था कि तुम सब को एक

काम करना है - कल अपने-अपने घर से फ्यूज़ बल्ब लेकर स्कूल आना है।"

फूज बल्ब!

बच्चों में खुसुर-फुसुर शुरू हो चुकी थी। बच्चों को मास्साब की बात समझ में नहीं आ रही थी। इसलिए वे कभी एक-दूसरे को ताकते तो कभी शिक्षक को।

आखिर नारंगी से रहा नहीं गया। उसने हिम्मत कर धीरे-से पूछना उचित समझा। मगर वह कुछ और ही पूछ बैठी, "मास्साब, फूज बल्ब से क्या करेंगे?" दरअसल, वह पूछना चाह रही थी कि फ्यूज़ बल्ब होता क्या है।

मास्साब ने नारंगी की ओर देखा। "अच्छा, ऐसा करते हैं कि 'क्या करेंगे' ये तुमको आज नहीं बताते। तुम सबको कल पता चल जाएगा जब तुम खुद करोगे। हाँ, बल्ब ज़रूर लेकर आना।"

कई बच्चों को समझ में नहीं आया था कि आखिर फ्यूज़ बल्ब होता क्या है। थोड़ा रुककर मास्साब ने पूछा, "अच्छा, पहले ये बताओ कि 'फ्यूज़ बल्ब' समझ गए न?"

मास्साब को सभी के चेहरे प्रश्नमय दिख रहे थे। बच्चे 'ना' कहने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। नारंगी ने एक बार फिर कोशिश की। वह कक्षा में खड़ी हो गई। मास्साब ने नारंगी को खड़ा देख बैठने का इशारा किया।

चित्र: हीरा धुर्वे

नारंगी फिर भी खड़ी थी।

मास्साब अनुमान लगा रहे थे कि नारंगी कुछ पूछना चाह रही है। "क्या पूछना चाहती हो?"

"मास्साब, ये फूज बल्ब कहाँ मिलेगा?" नारंगी धीरे-से बोली। मास्साब को समझ में आया कि बच्चे शायद फ्यूज़ बल्ब का मतलब ही नहीं समझ पा रहे हैं। "...अच्छा, तो पहले समझ लो। देखो, फ्यूज़ बल्ब मतलब खराब हो चुका बल्ब... जो बल्ब जल नहीं रहा हो।"

"अच्छा!" इतना जान नारंगी बोली, "अरे, वो! देखो, बोलने में नहीं आ रहा। ...समझ गई! जिस बल्ब के अन्दर का पतला-सा तार झड़ जाता है वो फूज बल्ब होता है।"

"हाँ, बिलकुल ठीक कहा नारंगी ने!" मास्साब हँस दिए, "ऐसा बल्ब जो खराब हो गया हो, वही फ्यूज़ बल्ब होता है। तो आज एक काम करते हैं, हम टोलियाँ बना लेते हैं। टोली तो समझते हो न? एक टोली में चार बच्चे होंगे।"

टोली बनाने का काम शुरू हो चुका था। बच्चों को यह पता नहीं था कि आखिर टोलियाँ क्यों बनाई जा रही हैं। फिर भी वे मास्साब के निर्देशों का पालन कर रहे थे। कक्षा में अफरा-तफरी मच गई थी। इस अफरा-तफरी से मास्साब किंचितमात्र भी परेशान नहीं थे। टोलियाँ बनाने के दौरान बच्चे भ्रमित हो रहे थे। कभी वे एक टोली में होते तो कभी किसी दूसरी टोली में। किसी टोली में दो बच्चे ही होते तो किसी में छह-सात। काफी देर तक बच्चों में कशमकश चलती रही। आखिर मास्साब को हस्तक्षेप करना पड़ा।

टोलियाँ बन चुकी थीं। मास्साब ने निर्देश दिया कि अब ये टोलियाँ पक्की बनाई जा चुकी हैं। इन टोलियों में बदलाव नहीं होना चाहिए। "तो चलो, कल मिलते हैं।" मास्साब ने बच्चों को जाने की इजाज़त दे दी थी। स्कूल से घर जाते हुए बच्चों के बीच फ्यूज़ बल्ब की चर्चाएँ ज़ोरों पर थीं। वे फ्यूज़ बल्ब को पाने की योजना बना रहे थे।

बच्चों की मास्साब से हुई इस मुलाकात ने उन्हें 'कुछ करने' का न्यौता जो दे दिया था।

चित्र: कैरन हैडॉक

स्कूल का आखिरी दिन

(तीन साल बाद)

नारंगी कहे जा रही थी, "इस स्कूल में सबसे ज़्यादा मज़ा विज्ञान में आया। 'बाल विज्ञान' तो कमाल का है! विज्ञान के कारण किसी को डाँट नहीं पिलाई। मास्साब ने विज्ञान की पढ़ाई में किसी को मारा भी नहीं।"

"ये तेरे 'विज्ञान' की तारीफ सुन-सुनकर मेरे कान पक गए। जब देखो 'विज्ञान' की ही बात करती रहती है। ऐसा क्या जादू कर दिया 'विज्ञान' ने? जब देखो, सवाल करती रहती हो! जब देखो, हर चीज़ में कुछ-न-कुछ देखती रहती हो!"

नारंगी ने माँ के कन्धे पर अपना सिर रख दोनों चोटियों को माँ के गले में डाला, और फिर अपने हाथों को फैलाकर कहे जा रही थी, "मज़ा ही मज़ा!" इतना कहकर नारंगी चलती बनी।

दरअसल, नारंगी जब सवाल करती, जब बेबाक बात करती तो माँ के दिल में खुशी की लहरें हिलोरे लेने लगतीं। माँ का मन खिल उठता। ऐसा ही हो रहा था अभी भी माँ के दिल में, मगर वे व्यक्त नहीं कर रही थीं नारंगी के सामने। वैसे नारंगी भी समझ रही थी, माँ के दिल की बात।

शाम का वक्त हो चुका था। नारंगी और उसके सभी दोस्त बाग में आ चुके थे। बाग में बरगद के पेड़ के नीचे गोल घेरे में अपने घुटनों को बाँहों में बाँधकर सभी चुपचाप बैठे थे। आज वे खेल नहीं रहे थे। वे चुप थे। वे सोच रहे थे, और सोचते ही जा रहे थे।

सोच का सफर

नारंगी की नज़रें घूमने निकल चुकी थीं। उसकी नज़र अपने घर की छत पर जाकर रुक गई। वह सोचे जा रही थी कि आखिर खपरैलों को पहली बार किसी इन्सान ने कैसे बनाया होगा। यह सोचते हुए वह पुराने ज़माने में पहुँच गई थी। सोचते-सोचते, पुराने ज़माने से लौटते हुए, वह अपने गाँव के कुम्हार - रतन दादा - के पास पहुँच गई कि कैसे वो मिट्टी इकट्ठा करने से लेकर खपरैल बनाकर उसे पकाते हैं। फिर वह सोचने लगी कि आखिर कैसे किसी के दिमाग में यह बात आई होगी कि चलो खपरैल बनाएँ। और जब किसी ने सबसे पहले खपरैल बनाए होंगे तो क्या उसे वैसा ही इनाम मिला होगा जैसे कि 26 जनवरी या 15 अगस्त पर स्कूल में मिलता है, या जैसे टीवी में लोगों को

इनाम मिलते हैं। नारंगी ने अपने सिर को झटक दिया, मानो उसकी एक सोच ने दूसरी सोच से कहा कि अरे नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ होगा।

नारंगी को उसकी माँ खपरैल वाली छत से उतरती हुई दिख रही थीं। अब वह अपनी माँ के बारे में सोचने लगी। स्कूल में चल रहे विज्ञान के पाठ में मछली के गलफड़े देखने का एक अभ्यास था। उसके मास्साब ने सभी को कहा था कि वे कहीं से मछली पकड़कर उनके गलफड़े देखें। तो उसकी माँ ने ही तो मछली के गलफड़ों को खोलकर देखने में उसकी मदद की थी। माँ ने कितने अच्छे तरीके से मछली को पकड़ा था! मछली को मरने भी नहीं दिया। उसके मुँह के बगल के गलफड़े को अपनी एक उँगली से थोड़ा-सा उठाकर, माँ ने सुर्ख लाल रंग के गलफड़े दिखाए थे। फिर माँ ने यह भी तो बताया था कि ताज़ी मछली में ये गलफड़े सुर्ख लाल होते हैं, और मछली के मरने के बाद गलफड़े गहरे कत्थई होने लगते हैं। नारंगी ने स्कूल की कक्षा में अपनी माँ के शब्दों में ही मछली के गलफड़ों वाली बात बताई थी, और मास्साब ने उसको शाबाशी दी थी। उँगली में बालों की लट को लपेटे वह सोचे, और सोचे जा रही थी।

क्या खोया, क्या पाया?

बच्चों का ध्यान भंग हुआ। मास्साब जो टहलते हुए चले आ रहे थे। मास्साब को नज़दीक पाकर सभी बच्चे उठ खड़े हुए।

"तो बच्चा-पार्टी आ चुकी है!" मास्साब अब बच्चों के बीच में थे।

"तो, अब आगे क्या करने वाले हो? आगे स्कूल जाने वाले हो या...?"

भागचन्द्र बोला, "पता नहीं..."

"तुम बताओ, नारंगी।" नारंगी कुछ बोली नहीं।

बच्चों की मिडिल स्कूल की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। स्कूल का यह दूसरा पड़ाव था। पहला पड़ाव पाँचवीं कक्षा का था। अब यहाँ से तीसरे पड़ाव की यात्रा प्रारम्भ की जानी है।

माध्यमिक स्तर पर बच्चे विज्ञान की जिस प्रक्रिया से गुज़रे हैं, वह उनके ज़हन में अंकित हो चुकी है। बच्चों में एक जुझारूपन और खोजी प्रवृत्ति का विकास काफी हद तक हुआ, जो उन्हें कहीं-न-कहीं काम आएगा। अगर फायदे-नुकसान की बात न भी करें, तो इतना तो तय है कि विज्ञान शिक्षण के तरीके से बच्चे रू-ब-रू हो पाए। बच्चों ने प्रयोग करना सीखा। बच्चों ने 'अवलोकन' का लुत्फ उठाया।

बच्चों के ऊपर विज्ञान शिक्षण ने तथाकथित 'दया' नहीं दिखाई कि वे कुछ कर नहीं सकते इसलिए उन्हें पका-पकाया परोस दिया जाए। बल्कि बच्चों की ताकत को समझा कि वे बहुत कुछ कर सकते हैं। बच्चों के सामने पल-पल और कदम-दर-कदम

चुनौतियाँ पेश की गईं। उन चुनौतियों से पार पाने का अर्थ हुआ – बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होना। अगर बच्चों में यह जज़्बा पैदा हो जाए कि वे भी कुछ सार्थक कर सकते हैं, तो यह कोई मामूली बात तो नहीं! बच्चों में ईमानदारी के बीज पनपाने में भी विज्ञान शिक्षण ने एक हद तक भूमिका अदा की। बच्चे जो प्रयोग करते और निष्कर्ष निकालते, उन्हें ही लिखा जाता। बच्चों को हर घटना पर सोचने को मजबूर किया जाता। इस अर्थ में, बच्चों ने वैज्ञानिक प्रक्रिया को सहज रूप से महसूस किया। और सबसे बड़ी बात कि बच्चों को मज़ा आया। यही असल विज्ञान है।

मज़ा याद रहेगा

चुप्पी के माहौल को मास्साब ने तोड़ा। माहौल को थोड़ा हल्का करने के लिए मास्साब मुस्कुराए और बोले, "तो, बहुत अच्छे रहे तुम सभी के साथ तीन साल। मैंने, तुमने और सभी ने खूब मज़ा किया!" मास्साब बैठते हुए आगे बोले, "अब आगे पढ़ाई जारी रखना। और अगर कहीं मेरी ज़रूरत महसूस हो तो बताना। पक्का तो नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारी मदद कर ही सकूँगा।"

नारंगी बोली, "मास्साब... विज्ञान की क्लास हमेशा याद रहेगी।" सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा, "ये तो सही है।"

चित्र: उर्वी

मास्साब और बच्चे एक-साथ बोल पड़े, "बहुत मज़ा आया।"

बच्चे और मास्साब एक-दूसरे की ओर प्यार भरी नज़रों से देख रहे थे। मास्साब ने नज़रें घुमाईं और एक सुकून भरी गहरी साँस खींचते हुए गहरी सोच में डूब गए। पश्चिम का आसमान ललिया रहा था। लाली पुते आसमान में सूरज धँसता हुआ दिख रहा था। सूरज की रोशनी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। पूनम का चाँद विपरीत दिशा से अपनी रोशनी बिखेरने के लिए उतावला दिख रहा था। चिड़ियें बरगद के पेड़ पर डेरा जमाने लगी थीं और उनके कलरव ने उस माहौल को खुशनुमा बना दिया था।

मास्साब और बच्चे उठे, और चल दिए।

(समाप्त)

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

'खोजबीन' शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित किए गए लेख आपने *संदर्भ* के पिछले कुछ अंकों में पढ़े। ये सभी लेख वाणी प्रकाशन द्वारा 2019 में प्रकाशित कालू राम शर्मा की किताब *खोजबीन का आनंद* से लिए गए थे। इन लेखों में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं का लेखा-जोखा है जिसे कहानी या किस्सागोई शैली में लिखा गया था।